T.D.C PART 1 , HISTORY (HOW) , PAPER I अनिल कुमार इतिहास विभाग, आर्विकी क्रीव आर्व कॉलीज ,महाराजर्जेज (सिवान) (Ale 23) For Electrical (Ison Age Cultures) (श्रीच भागार)

लाहे के प्रयोग की प्रधानता वद्ने लगी; परेलू उद्योग-यांची तथा वास्तु काषा पर भी इसका प्रभाव दिखने लगा। जिख रहित ढले हुये सिक्के भी व्यापार में प्रयोग किये जाने लागे । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लौहयुगीन ही-कृति का मानव सम्यता के विकास

पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

मृद्भाण्ड र्वं हरूति (ware culture) - स्थूसर पान परम्परा की रताज के भारतीय पुरातत्व की एक अत्यंत गहन समस्या का समाधान किया है। सिन्ध्य सभ्यता के लाभा । 500 ई० पूर्व के प्रयात तथा च्डिटनी शाताबदी ई० प्रवं के बीचा अन्याकीर थुग का नाम दिया जाता है लेकिन हिनितनापूर, अनेक पाचीन स्थाली पर पात्र परंपरा की प्राप्तिनी अारतीय प्रातत्व में विचित्र च्यूसर पात्र परम्परा को एक निवियत एवं महत्वपूर्ण द्यान प्रदान किया

इस परम्परा का प्रसार पंजाव, हरिधाणा Bust रामानान, तथा उपरी भें गायारी में विशेष स्प से भिल्ला है। जम्मु में मांडा से लेकर दिला में मध्यप्रदेश के उन्जैन तक मिलता है। चिमित चूपर पामी की बनावर के आप्पा पर अनुमान (भगाया) क्रजाता है कि क इस पाम परम्परा के निर्माता तथा उपयोग काने वाले सम्भवतः पश्चिम है उतर पूर्व एवं दक्षिण की और अग्रसर हुये होंगे

सुन्दर चिकनी तथा मुलायम मिट्टी का प्रयोग

MONDAY 08

किया ज्ञारा है। पमुल पात्र प्रकारों में करोरे, शालियां तथा लोटे हैं। इन वर्तनों को आड़ी तथा पड़ी एवं तिरप्ती रेखाएं, सिगमा तथा स्वादितक आदि को चिमित किया गया है। वर्तनों को आड़ी तथा तथा एकार के आवे में पकाया जाता था, जिसमा तथा काता था, जिसमा तथामान कमशाः कम होता जाता था, इसिए भे वर्तने को चोड़ा स्वात का उने होते थे। वर्तनों को घोड़ा स्वर्तने पर, उनका अलंकत का कि फिर पकाया जाता है।

YOVEMBER 07

क्वणलोहित पात्र वरम्परा, क्वण ल्यात्र पात्र परम्परा तथा लाल पात्र परम्परा औ चिमित खूसर पाम परम्परा के लाब होते थी। चिमित च्यूसर् पाम परम्परा का पुरातल में अत्यिखिक महत्वपूर्ण स्थान है। इससे सम्बन्धित अनेक स्थालों की रवदाई से कुल मिलाकर र्थरकृति के हारा एक विकसित ग्राम्य - जीवन की मिंकी के दर्शन डोते हैं। इस सी कृति की लॉह-युग्तिन संस्कृति के रवप में भी स्वीकार किया जाता है। चिमित चुसर पाम परम्परा के निर्माताओं का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि पर आपारित था। वस्म तथा आज्ञ्चणों के विषय में जो जानकारी प्पाप्त हुई है उनहे अनुसार् थे लोग खूती वस्त्रीं का प्रभोग कार्ते थे। स्त्री तथा पुरत्य दोनो कतो वस्त्राभूषणों का श्रीक था वरिभाणा है कुरक्षेत्र में पनी इई ईंटों के मकान के उनवशेष मिलते हैं। मृदमींड परम्परा के लोगों का उनार्थिक जीवन अधिक कठिन नहीं था। वान विनिमय का व्यवहार में प्रचलन था। धार्मिक

TUESDAY

282-083

अनुव्हानों के रूवप में प्राप्त जानकारी उनत्यिषिक कम है। 21व विसर्जन के लिए दफ्लाने की परेपरा का एकका - दुक्का समाण मिलता है। इस प्रकार इस स्रेम्ब्रित के लोग विकासिय ग्राम्य जीवन व्यतीत कर रहे की तथा गंगा हारी की दितीय नगरी थ कीते की इसने एक नया आपा प्रदान किया।

चित्रित द्यसर मृद्भांड (Painted Grey ware)-चित्रित च्यूसर सृदर्भांड के नाम से ही स्पष्ट है कि इन्हें इनका नाम इनके रेंगों के कारण दिया गया है। इनका रेंग चूसर होता है तथा इनपर चित्रकारी की जाती रही है। 1950-52 में हित्तिनापुर के खुदाई में प्राप्त मृद्भांड से तत्कालिन श्री-कृति के विषय में आनकारी प्राप्त होती है। सबसे पहले आहिच्छा फीर रामस्थान के पाण्या नदी, दो आब के अनमेष्ठ भेरे असे मथुरा, वराट, सोनीपत तथा पानीपत आपि से लेका पूर्व में की शामकी तथां भावस्ती लड़ stani atak Amai El

ये पाप्र सामान्यतः दा प्रकार के होते हैं-ि देंचे गर्दन वाली तश्री के आकार का पाम , क्र करोरी के आबाद का पाम । भे पाम आगा के पतले होते हैं जी कि मुलायम मिहीसे चाक पूर् बनाये जाते हैं। आग पर पकाने के काण डनका रेग धूसर से वदलकर भूरा तथा काला क्रिम हो आता है/क चिम कारों का ने के लिए पहले पाम की न्याक से अतारने पर बाइक्रोम लगावर विभिन्न भकार के न्यारे से समान ( पकाया माता हत्या निपाण के लिए काला अनेर केमी-कामी--वाकले ही रुगों का अभीग किया जाता है।